१ओअंकार (१ਓ) सतिगुर प्रसादि ।।

एक विशेष काव्य रचना "चेतावनी"

ਲਾਂਚ ਕਰਤਾ :

क्रांतिकारी जगद् गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Lunched By : Jasbir Singh
9988160484, 62390-45985
0172- 2696891

Type Setting By :
Radhe Shyam Choudhary
98149-66882

नि:शुल्क सेवा : स्वयं पढ़े और अन्य लोगों को पढ़ाये।

Download Free

एक विशेष काव्य रचना "चेतावनी"

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।
आपनी बाल फुलवाड़ी की तरफ दृष्टि मारो ।।

आज कुरीतियों ने हमारे बच्चों को डाला है घेरा ।
पतित पन की लहर हमारे घरों में लगा रही है फेरा ।
गुरू घरानों में से सिक्खी श्रद्धा ने उठा लिया डेरा ।
हमारी संताने बेमुख हो रही कहां ध्यान है सिंघा तेरा ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।
भूलो न विरासत अपनी, कुछ सोचो-विचारो ।।

अन्य मतावलम्बिओं के विद्यालयों में बच्चों को हैं पढ़वाते ।
मूल मंत्र के स्थान पर उनको, इंग्लिश गाने है सिखाते ।
रविवार को भी गुरु घर ना ले जाए, टी. वी., विडियों हैं दिखाते ।
साखियों के बदले हम उन्हें फिल्मी कहानियां है सुनाते ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।
पनीरी सवारने के लिए होर हम्भला मारो ।।

शेर दिल बलवान बनाने के स्थान पर, बुजदिल कायर उन्हें बनाते ।
गुरु घरों बख्शे नामों के स्थान पर फरज़ी निक नेम से उन्हें बुलाते ।
सादी जीवन शैली अपनाने के बदले फिल्मी फैशन हैं करवाते ।
गुरमति संस्कारों को ग्रहण करवाने बदले डिस्को-पोप डांस नचवाते ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

वर्तमान की दुर्दशा से पंथ को उभारो ।।

ना जानेगे गुरमुखी अक्षर, वे बच्चे गुरमति साहित्य कैसे पढ़ेगे ।

पढ़ न सकेंगे विरसा आपना, वे अन्यमतिओं के चुंगल में चढ़ेगे।

जानेगे न जो अपना कलचर, कौम के पक्ष के लिए कैसे लड़ेगे ।

अभिभावक जो करते लापरवाही वे जाते समय को कैसे पकड़ेगे।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

बच्चों का चरित्र अपने हाथों से उसारो ।।

आज अभिभावको में बच्चों को पोइमों सिक्खाने का है फतूर ।

क्यों नहीं विचारते वे गुरवाणि भी कंठ कर लेंगे जरूर ।

विदेशी भाषाएं तो जान गए परन्तु मातृ भाषा से होगे दूर ।

अपनी धरोहर में शून्य परन्तु हमें है उनकी गिट-मिट पर गरूर ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

समय अभी भी है भूल अपनी सुधारो ।।

हम बच्चों की शिक्षा के लिए खर्च करते है कई हज़ार ।

गुरुमति विद्या पर तिलभर भी खर्च ने को नहीं तैयार ।

मैरिटलिट में लाने के लिए परिश्रम करवाएं बेशुमार ।

गुरमति प्राप्ति करने के लिए, बच्चों को न प्रेरे एक बार ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

गुरमति का प्रकाश अपने घरों में खिलारो ।।

बच्चों की वार्षिक छुट्टियों को हम बेअर्थ देते गुजार ।

गुरमति क्लासों के लिए मिशनरी प्रेरित करे तब करें तकरार ।

बच्चों के बदले स्वयं ही बहाने बना लेते हैं बेशुमार ।

गुरमति के मार्ग पर चलने को क्यों नहीं करते तैयार ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

पतित हो रहे बच्चों को सिक्खी की तरफ पुचकारो ।।

जो गुरमति से है खाली, वे माँ-बाप का न करें सत्कार ।

मनमतियों की कुसगंत कारण सभी से करते दुर्व्यवहार ।

कहना न माने दिल दुखावे, ना रखें समय की सुध-सार ।

अनुशासन का करें न पालन, वे सभी के साथ करे तकरार ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

बाल्यकाल से ही बच्चों की संगत को सुधारो ।।

गुरू के लाल तुम्हारे घर से गुरू की मोहर गई है ग़वाच ।

युवक पहने बांदर टोपी दसतार सजाने की नहीं आती जाच ।

घरों में गुरवाणी के स्थान पर, ऐब कर रहे नंगा नाच ।

प्यारो अब भी सम्भलो, सिक्खी शान को आ रही आन्च ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

दाग न लगाने पावे सिक्खी के पहरेदारो ।।

इस्तेमाल करती है सिक्ख युवतिया, आज कल ड्रग जैसी ज़हर ।

ब्यूटी पार्लर में करवावे बेअदबी, करे केशों पर कहर ।

भद्दी फैशन प्रस्ती कारण, अर्ध नग्नता की चल पड़ी लहर ।

गुरमति के स्थान पर उनके मन में पश्चिमी सभ्यता गई है ठहर ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

गुरमति विद्या से अपने बच्चों को शृंगारों ।।

युवा पीड़ी रहित मर्यादा को कर कुरीतियां करे बदनाम ।

बन कर शराबी-कबाबी खाये तम्बाकु करते ऐशो-आराम ।

दाड़ी काट करे बेअदबी ना जाने केशों का दाम ।

इस प्रकार सिक्ख घरानों में पड़ रही है सिक्खी की शाम ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

शहीदों के कारनामे न मन से बिसारो ।।

त्याग कर सहारा अकाल पुरुष का, देवी देवताओं को हैं मनाते ।

दम्भी गुरूओं के आश्रम जा कर सिक्खी शान पर दाग लगाते ।

दर बाबे नानक का त्याग कर, मटठ मड़ियों पर शीश झुकाते ।

गुरवाणि की प्रीति भूलकर, पश्चिमी संगीत से मन बहलाते ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

गुर मर्यादा अपने घरों में भी प्रचारो ।।

गुरमति विद्या के लिए आपका मिशनरी कॉलज है सच्चा मित्र ।

जिस का साहित्य सभी बच्चों का निर्माण करता है चरित्र ।

पढ़कर ज्ञान में हो जाए वृद्धि जीवन भी हो जाए पवित्र ।

गुरू दंभिओं, अन्य मतावलम्बियों को प्रभाव से बच्चे आयेगे नित्तर ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

गुरमति विद्या से बच्चों का जीवन निखारो ।।

देखो! इसाई प्रचारकों का, प्रचार करने का काम-काज ।

नि:शुल्क पुस्तकें बाटे, करते वे अपने धर्म पर नाज़ ।

हम उनकी नकल भी नहीं कर पाते, क्यों न आती लाज़ ।

हमने दशमांश को बना लिया है जग दिखावे का पाज ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

दसवंद साहित्य पर खर्चो पंथ के पहरेदारो ।।

सिंघों! अपना दशमांश कहीं ओर तुझे देने की नहीं लोड़ ।

सोने के छब्बे व कलछ खरीदने पर धन मत अपना रोड़ ।

गुरमति लाईब्रेरियों के लिए भी इस दशमांश को जोड़।

बच्चों को गुरमति विद्या देने के लिए भी ध्यान मोड़ ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

कुछ करो परिश्रम मिशनरी कॉलेज के मददगारो ।।

सब से बड़ा दान है कौन-सा हमने भेद न पाया ।

जबकि ''अकली कीचै दान'' गुरुदेव ने कह सुनाया ।

बड़ा दान है गुरमति विद्या, गुरदेव ने स्वयं फुरमाया ।

अच्छी किताबे व पत्रिकाएं कौमों की होती है सरमाया ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

प्रधानगी के चक्रव्युह में चोट सिक्खी को न मारो ।।

हम बन गये है मायाधारी, कुसंगत कारण पीये शराब ।

जगद् दिखावे, झूठी बड़ाई के लिए धन खर्चे बेहिसाब ।

समय क्लबों में व्यर्थ गवाए, न पढ़े गुरमति की कोई किताब ।

पैसे है नहीं समय है नहीं, मिशनरिओं को देते है जवाब ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

सोई ज़मीर जगा कर भाग्य कौम का सवारो ।।

सिंघा! हम लोगों की स्वतन्त्रता समय अस्सी लाख थी गणना सारी ।

हम दो गुने भी न हो सके, हम पर क्या पड़ गई है विपत्ति भारी ।

हमें पतित पन ने निकल लिया, अथवा परिवार नियोजन है मति मारी ।

बहुमति वालों न जान कर अल्प संख्यक, हमें सदैव चोट लगाई करारी

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

राजनीति की इस भयंकर भूला को विचारो ।।

जब उन्नीस सौ सैंतालिस को थी, भारत को मिली आजादी ।

अधिक कुरबानी दी थी हमने, भले ही कम थी अपनी आबादी ।

अंग्रेज़ों से कुछ ले न पाये, क्योंकि छल-कपट को नहीं थे आदी

सभी मनाएं आज़ादी की मौजे, हमारे भाग्य में आई बरबादी ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

माथे से पतित पन का कंलक लाह उत्तारो ।।

सिक्खी शान के लिए अमृतधारण करना एको-एक है पैमाना ।

अब तुम ऐब कुरीतियां त्यागों, ऐसे ही न कर कोई बहाना ।

श्वासों की पूजी का कोई पता नहीं, माया में न हो मस्ताना ।

प्रत्येक सिक्ख होए अमृतधारी, खालसा पंथ का यही निशाना ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओं, सिंघों सरदारो ।।

रहितवान बनकर दिखाओ, सिक्खी के पैरोकारो।।

अभी तक सिंघ तुम नहीं सज पाए बेशक हो केशाधारी ।

ना तुम बने गुरूवाले, ना बन पाए पांच ककारी ।

ऐसे ही समय व्यर्थ न गवा काम नहीं आती दुनियादारी।

अन्य मतावलम्बियों की नकल त्याग दो, यदि कायम रखनी सरदारी ।

ओह न्यारे स्वरूप वालिओ, सिंघों सरदारो ।।

बैसाखी पर्व पर अमृतपान करने के लिए पधारो ।।

प्रवक्ता– बेटा जी, दाड़ी प्रकृति द्वारा मानव को दिया गया उपहार है अर्थात यह (**god gift**) और (**Natural Beauty**) हैं। इस में पुरूषों के चेहरे पर अल्लाहीनूर दिखता है। प्रकृति ने नारीयों को दाढ़ी नहीं दी, केवल पुरुषों को दाढ़ी से श्रृगांरा है। इसे **As it is** (ज्यों का त्यों) ही रखना चाहिए। हमें अपने स्वरूप में **Modification** करने का कोई अधिकार नहीं, है।.....हम मानव समाज के प्राणी है इसलिए **Maintenance** करना हमारा कर्त्तव्य है। **Maintenance** में आप दाड़ी आवश्यकता अनुसार कई विधियों द्वारा बांध सकते है। परन्तु मुझे दुख है कुछ भटके हुए सिक्ख युवक अपनी दाड़ी का बहुत बुरी तरह अपमान करते हैं। यहाँ तक देखा गया है कुछ युवकों के चेहरे पर उनकी दाड़ी इस प्रकार दिखाई देती है जैसे किसी मीठी वस्तु पर चींटिया चिपटी हो! यही बस नहीं, कुछ युवकों की दाड़ी के नमूनों के मैं नाम यहां काव्य रूप में कह देता हूँ। जैसे–

गुर सिक्खों की है सच्ची–सुच्ची प्रकाशमान दाड़ी।।

श्रद्धावान जवानों ने भी जैल–फिक्सों से है सवारी।।

मनमुंखो की दाड़ी ऐसी दिखे जैसे झूलसी हुई झाड़ी।।

बेमुखों ने दाड़ी तीखे कांटों की तरह बिगाड़ी।।

बेवकुफों की दाड़ी ऐसी दिखे जैसे मीठे ऊपर चीटियां।।

लोग हंसे और खिल्ली उड़ाए, व्यंग में बजाएं सीटियां।।

उनको फिर भी शर्म न आये लोक लाज से आंखें मीटियां।।